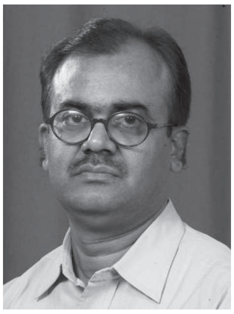

सेराज बैंड बाजा

जयनंदन

माघी खलको का वह पहला दिन था जब बारात में अपने सिर पर ट्यूब लाइट का गमला ढोनेवाली रेजा का काम शुरू कर रही थी। प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः वाली कहावत चरितार्थ हो गयी थी। बारात चली ही थी कि मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। सभी बुरी तरह भीग गये, लेकिन माघी को भीगना कुछ ज्यादा ही असर कर गया। उसके साथ ग्यारह रेजायें और थीं, लेकिन वे काफी दिनों से यह काम कर रही थीं। उनका अभ्यास था, इसलिए वे गमले को एक हाथ से पकड़कर भी चल ले रही थीं, दूसरे हाथ से बदन का पानी पोंछ ले रही थीं। कभी-कभी तो वे दोनों हाथ छोड़कर भी चल ले रही थीं। माघी संतुलन बनाने के मामले में एकदम कच्ची थी और गमला दोनों हाथ से पकड़े बिना चलना मुश्किल था।

उसका एक-एक वस्त्र भीगकर लथपथ हो गया था। पानी उसके एक-एक अंग को भिगोकर एक लघु नदी बनकर ऊपर से नीचे बहने लगा था उसके पांव से होकर जमीन पर, लेकिन मजबूरी थी कि वह पानी पोंछ तक नहीं सकती, चूंकि दोनों हाथों से वह गमला पकड़े हुये थी। वह आगे या पीछे भी नहीं हो सकती, चूंकि उसके आगे और पीछे तीन-तीन गमलेवाली और भी चल रही थीं जो बिजली के एक तार से संबद्ध थीं। बिजली देने वाला जेनरेटर एक रिक्शा पर रखा हुआ फट-फट की जोरदार आवाज लगा रहा था।

रिक्शा बरातियों के साथ धीमी चाल से रेंग रहा था। उसके पीछे कारों का एक काफिला था। सबसे अगली कार में मजे से दूल्हा और उसके कुछ खास रिश्तेदार बैठे हुए अपनी विशिष्टता को इंज्वाय कर रहे थे। सबसे आगे दो पंक्ति में बैंड पार्टी वाले फिल्मी धुनें बजाने की जिम्मेवारी निभा रहे थे। उनके बीच में लड़के-लड़कियों का हुजूम मस्ती में नाच रहा था और कुछ लड़के छतरी की मदद से पटाखे-फुलझड़ी चलाने की कोशिश कर रहे थे।

नवम्बर का महीना था, ठंड पड़ना शुरू हो गयी थी। माघी पानी से भीगकर ठिठुरने लगी। कंधे से लगी हुई शॉल भी नीचे सरक गयी। अपने सीने के उभार के उजागर हो जाने से वह झेंपने लगी। ऐन इसी वक्त कोई कीड़ा रेंगता हुआ साड़ी के भीतर से उसके दाहिने पैर पर चढ़ने लगा। इसके पहले कि वह जांघ तक पहुंचता, माघी बुरी तरह अव्यवस्थित हो गयी। उसके हाथ गमला छोड़कर स्वतः ही कीड़े को झाड़ने में लग गये। गमला सिर से नीचे गिर पड़ा और उसकी पंक्ति में चल रही सारी बत्तियां तार के खिंच जाने से बुझ गयीं। अंधेरा होते ही एक अराजक स्थिति उत्पन्न हो गयी। रंग में भंग पड़ने से बाराती वाले और बैंडपार्टी के मालिक उसे दुत्कारने और कोसने लगे। नाच रहे कुछ लौंडे तो उस पर लप्पड़-थप्पड़ चलाने की नीयत से लपक पड़े, तभी उसके बगल से ट्रम्पेट बजाते हुए चलने वाला सेराज मियां अपने दोनों हाथ फैलाकर उसका रक्षा-कवच बन गया।

बैंड ऑनर ने तो उसे उसी वक्त काम से भगा दिया। लेकिन अगले दिन सेराज ने उसे दूसरी जगह काम दिला दिया। वह सांवली थी और मुखड़े की बनावट से भी बहुत सुन्दर नहीं थी, फिर भी उसकी आंखों में एक भोलापन, मासूमियत और दयनीयता थी जो देखने वाले को अपनी ओर चिपका लेती थी। सेराज ने महसूस किया कि उसके दिल के किसी नर्म कोने को माघी ने छू सा दिया है।

माघी को चौबीस-पच्चीस की छोटी सी उम्र में ही बेहद त्रासद स्थितियों से सामना करना पड़ा था। वह अपने गांव डुगरिया में अपने बाबा-माई की छत्रछाया में बहुत बेफिक्र जीवन जी रही थी और अपने गदराते यौवन की खुमारी उसमें नये-नये सपने भर रही थी। इन्हीं दिनों उसके घर पर जैसे वज्रपात हो गया। एक रात उसके मां-बाप कुछ नकाबपोश अपराधियों द्वारा गला रेत कर मार दिये गये। इस आशंका से कि गांव में हुई एक परिवार की हत्या में उसके भाई रोगला खलको का हाथ है।

कुछ माह पहले उसका बी.ए. तक का पढ़ा-लिखा इकलौता भाई रोगला खलको जंगल की तरफ निकल गया और वापस नहीं लौटा। एक परिवार के गुजारे के लायक अच्छी जमीन-जोत थी, लेकिन वह एक अदद नौकरी की तलाश में भागता फिरता रहा। एक राजनीतिक दल से जुड़कर बहुत दिनों तक वह नेताओं के आगे-पीछे करता रहा, उनके भाषण स्थल पर भीड़ जुटाने का काम करता रहा, लेकिन बदले में उसे कुछ भी मनोवांछित नहीं मिला। उसने देखा कि उसकी ही जाति-समाज और रंग-रूप के शीर्ष पर पहुंचे कुछ नेताओं ने चंद महीनों में अरबों-खरबों की अवैध कमाई कर ली और गरीबों तथा बेरोजगारों के सपनों के निवाले छीन लिये। जहां विकास की गंगा बहनी चाहिए थी, वहां दो-चार बूंद का टपकना भी मुहाल हो गया। ऐसे में उम्मीद करने के लिए शराफत की पगडंडी का कोई अर्थ नहीं रह गया, और फिर उसने जंगल का रास्ता पकड़ लिया।

उसके गये कुछ ही माह बीते होंगे कि गांव के एक दबंग ठेकेदार परगना महतो के घर पर रात को आठ-दस सशस्त्र लोगों ने हमला किया और उसके दो भाइयों को गोलियों से भून डाला। गांव में जिला पुलिस ने एक नागरिक सुरक्षा समिति बनायी थी, परगना उसका अध्यक्ष था। अध्यक्ष होने की आड़ में वह गांववालों पर कई तरह की ज्यादतियां वरपा करता था। लोग उससे डरते थे, चूंकि पुलिस उसकी संरक्षक बन गयी थी। रोगला अक्सर उसकी बहुत सारी नाजायज कारगुजारियों का विरोध किया करता था। अतः वह उसे अपना घोषित विरोधी मानता था। समिति ने मीटिंग करके तय किया कि रोगला खलको ने ही उसका सुराग देकर उसके परिवार की हत्या करवायी है। बदले में उसके परिवार को भी खत्म करके करारा जवाब देना चाहिए। और फिर एक दिन सांझ ढलते ही उसके मां-बाबा छूरे से गला रेतकर मार दिये गये। माघी घर से बाहर थी इसलिए बच गयी। अब उसका गांव में रहना खतरे से खाली नहीं था। अड़ोस-पड़ोस में जो उसके गिने-चुने शुभचिंतक थे, सबने सलाह दी कि वह भागकर शहर चली जाये। अपने मां-बाबा की वह अंत्येष्टि भी न कर सकी। पुलिस ने ही सब कुछ किया।

शहर में कई जगह भटकने के बाद उसे पहला काम बारात में ट्यूब लाइट का गमला ढोने का मिला, जिसमें उसे कड़े इम्तहान से गुजरना पड़ा और वह नाकामयाब रही। सेराज मियां ने सहारा न दिया होता तो पता नहीं उसकी क्या-क्या दुर्गति हो गयी होती। बगल के गांव के जिस लड़के से बाबा ने उसकी शादी तय की थी, उस वारदात के बाद डर से उसने भी मुंह मोड़ लिया।

सेराज ने उससे एक दिन कहा, 'मैं चाहता हूं कि बत्ती ढोनेवाली रेजा के काम से तुम्हें छुटकारा मिल जाये। तुम सिलाई-कढ़ाई का काम सीख लो। बैंड-बत्ती का काम तो ऐसे भी साल भर चलता नहीं है। शादी का सीजन नहीं रहने पर सारे बैंडवाले दूसरे धंधे में लग जाते है। कोई टेलरिंग में, कोई फल बेचने में, कोई मोबाइल रिपेयरिंग में, कोई टीवी रिपेयरिंग में, कोई घड़ी रिपेयरिंग में, कोई सुरमा, इत्र और चूड़ी बेचने में, कोई दीवार पेंटिंग में, कोई रिक्शा चलाने में।

माघी ने मन में विचार किया और कहा, 'मैं वही काम करना चाहती हूं जो आप करते हैं। आप सिलाई जानते हैं, मुझे सिलाई सिखा दीजिये... आप क्लार्नेट और ट्रम्पेट बजाना जानते हैं, मुझे भी बजाना सिखा दीजिये। मैं आपके हर कदम पर आपके साथ चलना चाहती हूं। बारात में मेरा काम चाहे जो भी हो, हमें उसमें शरीक होना अच्छा लगता है। गाना, बजाना, नाचना और आतिशबाजी मेरे भीतर एक लहर पैदा कर देती है। मेरी बहुत सारी कड़वाहटें और दुख कम हो जाते हैं।'

सेराज ने उसे दिल से चाहा और हर तरह की मदद की। माघी भी उससे खुलती, घुलती और आत्मीय होती चली गयी। एक तरह से उसने उसके विस्थापित जीवन को पनाह दे दिया। काम दिलाया, घर दिलाया, कामचलाऊ पढ़ना-लिखना सिखाया, चर्चित फिल्मी गानों से परिचित कराया और सबसे बड़ी बात कि क्लार्नेट जैसा कठिन वाद्ययंत्र बजाना सिखा दिया। शायद वह पहली ऐसी लड़की होगी इस शहर में जिसने क्लार्नेट बजाने जैसी कला को साध लिया।

माघी क्लार्नेट सीख रही है। सेराज उसे सा रे ग म सिखा रहा है। रियाज कई कई घंटे रोज चलने लगता है। एक दिन माघी क्लार्नेट पर उस गाने का बोल निकाल देती है, जिसे उसने सिखाया ही नहीं था। 'खुदा जाने मैं

फिदा हूं... खुदा जाने मैं मिट गया... खुदा जाने ये क्यूं हुआ है... कि बन गये हो तुम मेरे खुदा।'

सिलाई मशीन पर उसे सीना सिखा रहा है। एक साथ पैडल पर पैर भी चलाना और ऊपर कपड़े को भी संभालना। एक दिन माघी सबसे पहले जो सिलती है वह उसके लिए एक कमीज होती है। सेराज हैरान रह जाता है। औरतों में सिलाई-कढ़ाई और रसोई करने के गुण शायद जन्म जात होते हैं।

वह स्लेट पेंसिल लेकर ककहरा सिखाता है। कम वक्त में ही वह लिखना-पढ़ना सीख जाती है। पहले भी वह गांव के स्कूल में दो-चार साल तक आती-जाती रही थी। ककहरा का उसे ज्ञान था। किसी भी चीज के सीखने में लगन वह इस तरह लगा लेती थी कि हुनर तुरंत ही सध जाते थे। एक दिन जब वह लिखकर चली जाती है तो स्लेट पर लिखा हुआ पढ़ता है सेराज। पढ़कर अचम्भित रह जाता है। उसने लिखा है- 'सेराज बाबू, मेरा तो रोम-रोम आपका कर्जदार हो गया है। कैसे चुकाऊंगी यह कर्ज? आपने पूरी तरह मुझे जीत लिया। अब तो माघी पर माघी का ही अख्तियार नहीं है। आप न होते तो लोग मुझ यतीम को एक गटर में बदल चुके होते। आपको कभी मेरी जान की भी जरूरत हो तो निस्संकोच मांग लीजिएगा।'

सेराज ने बहुत उम्र तक शादी नहीं की थी। उसका एक भाई था नेयाज, जो नौकरी करने सऊदी अरब चला गया और घर को पूरी तरह भूल गया। उसकी घरवाली और उसका एक बच्चा यहीं रह गया। इनकी परवरिश की जिम्मेवारी सेराज पर ही आ गयी। नेयाज का कोई अता-पता नहीं रह गया। न कोई चिट्ठी-पत्री, न कोई टेलीफोन। इंतजार में कई वर्ष बीत गये। सेराज को उसके अब्बा और उसकी भाभी मेहंदी के नैहरवाले उसे अपना घर बसाने से रोकते रहे... कहीं नेयाज नहीं आया तो... कहीं नेयाज आ गया तो!

इसी बीच उसके अब्बा और उसकी भाभी मेहंदी ने माघी से बढ़ रही उसकी नजदीकी को ताड़ना शुरू कर दिया। जब उन्हें लगा कि अब इसे रोकना मुश्किल होगा तो मेंहदी के मायके वालों से और मौलवी से उन्होंने बातचीत करके एक फैसला ले लिया कि सेराज का निकाह अब मेंहदी से करा दिया जाये। वह तो इस उम्मीद से ही इस घर में टिकी हुई थी। मन ही मन वह नेयाज की बेदिली से नफरत करने लगी थी। अगर वह इत्तफाक से आ भी जाता तो उससे पहले की तरह उसका जुड़ना मुमकिन नहीं होता।

सेराज ने साफ इंकार कर दिया कि वह भाभी से निकाह नहीं करेगा। लेकिन इस मुद्दे पर वह बिल्कुल अकेला पड़ गया। चारों तरफ का दबाव उस पर तारी होने लगा। सबकी सहानुभूति मेहंदी के साथ थी। सेराज के सामने एक बड़ा धर्मसंकट पैदा हो गया।

सेराज का इंकार सुनकर उसकी भाभी उसके आगे बिछ गयी, 'क्या मैं तुम्हें इतनी बुरी लगती हूं? वर्षों से इस घर में रही हूं, तुम लोगों की खिदमत की है, क्या उसका यही सिला मिला कि अब मुझे बेघर हो जाना पड़ेगा? नेयाज के चले जाने के बाद मैं अगर टिकी रही यहां तो बुनियाद तुम्हीं थे। अब तुम मुझे ठुकरा दोगे तो मैं तो कहीं की नहीं रह जाऊंगी। अगर ऐसा ही करना था तो तुम इतने दिन खुद क्यों निकाह के लिए रुके रहे, कर लेते तो मैं भी कोई उपाय ढूंढ़ लेती। अपनी जवानी वाले आठ-दस साल जाया तो न होने देती।' मेंहदी की आवाज एक निराश फरियादी की तरह जैसे आंसुओं से तर-ब-तर हो गयी थी। उसका आठ साल का बेटा सेराज की पीठ पर झूलने लगा था, जैसे अपनी मां की तस्दीक करते हुए कह रहा हो कि मुझे इतने दिनों तक लाड़-दुलार किया, क्या अब पराया कर दोगे छोटे बा?

सेराज क्या जवाब देता, उसके पास जवाब ही क्या था। मेहंदी कुछ भी तो गलत नहीं कह रही। उसने वाकई उसका कितना ख्याल रखा था, खाने-पीने से लेकर पहनने-ओढ़ने और बिछाने-सोने तक। बच्चा तो मानो उसके हंसने-खिलखिलाने, तरन्नुम गढ़ने और उसमें बहने का एक खुशगवार ठिकाना था।

यह असमंजस चल ही रहा था कि माघी का पूर्व मंगेतर नरसा मुर्मू एक दिन सेराज से मिलने चला आया। माघी की दिनचर्या और हालचाल पर वह अपनी पैनी नजर बनाये हुए था। उसने सेराज को धमकाते हुए जैसे एक विशालकाय चट्टान रख दिया उसके आगे कि जरा इसे फलांग कर दिखाओ, 'तुमने माघी की मदद की, उसे सहारा दिया, हम इसका बहुत एहसान मानते हैं। लेकिन तुम उससे शादी नहीं बना सकते। उसकी शादी हमसे तय की हुई है, हम करेंगे उससे शादी।'

'इतने दिनों से तुम कहां थे। उसकी तो कभी खोज-खबर नहीं ली। जबकि मुसीबत के वक्त तुम्हें उसका साथ देना था।'

'हम गांव का गरीब आदमी है, हम बहुत डर गया था। परगना महतो बहुत कसाई आदमी है। उसने हमको धमकी दे दिया था कि माघी से शादी बनायेंगे तो हमको गांव से बाहर कर दिया जायेगा।'

'क्या अब वो तुम्हें गांव से बाहर नहीं करेगा?'

'हम अब माघी के साथ ही शहर में आकर रहेगा।'

'क्या इस बारे में तुमने माघी से पूछा, तुमसे शादी करने और शहर में तुम्हारे साथ रहने के लिए वह तैयार है?'

'पूरा गांव जानता है कि उसके बाबा ने माघी से मेरा रिश्ता पक्का कर दिया था। वह तैयार हो, न हो, तुम उससे शादी नहीं करोगे।

करोगे तो अच्छा नहीं होगा। बुरा नतीजा से बचाने के लिए हम तुमको बोलने आया है। काहे कि माघी को तुमने बहुत मदद किया है।'

सेराज सन्न रह गया। अपनी भाभी से निकाह के मुद्दे को वह निष्ठुरता से लांघ भी जाये मगर नरसा मुर्मू नामक घातक चट्टान को वह कैसे पार करे। माघी को उसने सारा माजरा बताया तो मानो उसकी देह का खून जम गया। कदम-कदम पर औरत की बलि देने के लिए कसाई तैनात हैं। अपने को बचाकर यहां तक लायी, सेराज जैसे मसीहा का साथ मिला तो अब भी उस पर तलवार तनी है। सेराज के गले में यह निवाला उगले तो अंधा और निगले तो कोढ़ी जैसा बन गया। माघी ने सेराज की आंखों में सब कुछ लुट-पिट जाने जैसी छायी बेबसी को पढ़ लिया। उसने उसे इतना गमगीन कभी नहीं देखा था।

माघी ने सेराज की हथेलियों को अपनी अंजुरी में भर लिया। प्यार के अगाध, अलौकिक और स्निग्ध सम्मोहन के साथ उसे निहारा और कहा, 'आप चिन्ता में न पड़िये सेराज बाबू। आपका अपनी भाभी से ही निकाह करना ज्यादा जरूरी है। मेरी परवाह न कीजिये, आपके लिए मेरे मन में जरा सी भी शिकायत नहीं है। नरसा से मैं निपट लूंगी। मैं उसकी कोई खरीदी हुई जायदाद नहीं हूं। वह कितने पानी में है, औकात बता दूंगी। जान पर खेल जाऊंगी, लेकिन उसके जैसे खुदगर्ज को अपने पास फटकने नहीं दूंगी। आपने मुझे इतना मजबूत बना दिया है कि मैं अकेले भी जिंदगी जी सकती हूं। जितना कुछ आपसे मुझे मिला है, मैं ताउम्र आपकी कर्जदार रहूंगी।'

सेराज ने उसके हाथों को चूम लिया, 'आज तुमने मुझे यह इल्म करा दिया कि तुम डुगरिया गांव से आयी सहमी-सिमटी माघी खलको से बदलकर एक कद्दावर शख्सियत वाली लड़की बन गयी हो। मुझे फ़ख्र होता है तुम्हें देखकर। तुमसे निकाह मैं कर पाता तो मेरे लिए यह खुदा की सबसे बड़ी नेमत होती। मेहंदी से निकाह करना मुझसे ज्यादा औरों को खुशी देगा। मैं शादी नहीं कर रहा, शहादत दे रहा हूं। यह मलाल मैं ताउम्र ढोऊंगा कि तुम्हें मैं अपना न बना सका।'

'आपको भले लगता हो कि मुझे अपना बना न सके, लेकिन मैं तो आपको ही अपना बनाकर जिऊंगी सेराज बाबू। दिल की दुनिया में किसी निकाह, मजबूरी और बंदिश की कोई जगह कहां होती है भला।'

'मुझे अच्छा लगा यह जानकर कि तुम मुझसे नाराज नहीं हो रही और खुद को मुझसे अलग नहीं समझ रही। तुम्हारी इस दिलासा से हमेशा मुझे एक ताकत मिलती रहेगी। तुम्हें जब भी मेरी मदद की तलब हो, कहने में कोताही न करना।'

माघी ने सेराज को अपनी बाहों में भर लिया। उसे लगा कि काश कायनात यहीं ठहर जाती।

सेराज ने उसे एक भद्र मोहल्ले में रहने के लिए एक अच्छी सी भाड़े की कोठरी दिला दी थी। वह इन दिनों शहर के एक नामी मुन्ना बैंड पार्टी में काम कर रही थी। मालिक उसे खूब तरजीह देता था, चूंकि वह हर फन में माहिर हो गयी थी। किसी भी बजनिया के नागा करने पर वह कोई भी इंस्ट्रुमेंट बजा लेती थी। नागा न हो तो फिर वह गमला ढोने में भी शर्म नहीं करती थी। बैंड की दुनिया चूंकि मर्दों की थी, इसलिए कदम-कदम पर उसे परेशानी उठानी पड़ती और उनसे बच लेने का उसे रास्ता निकालना पड़ता। सेराज उसकी ढाल बनकर खड़ा रहा करता था। अब सब जान गये थे कि वह माघी को छोड़ मेहंदी से निकाह कर रहा है। जब बैंड में काम नहीं होता तो वह अपने घर में ही सिलाई का काम शुरू कर देती। ज्यादातर उसका काम मोहल्ले के लोगों से चल जाता। कभी टान हो जाने पर वह बड़े दुकानों से काम ले आती।

सेराज अपना निकाह एकदम सादगी से करना चाहता था, चूंकि उसका उत्साह एकदम सिकुड़ सा गया था। लेकिन उसके दोस्त और घरवाले इसरार कर बैठे कि वह सबकी बारात निकालता रहा है, फिर उसका निकाह बगैर बारात निकले हो, यह वाजिब नहीं हो सकता। दुल्हन की भले ही दूसरी शादी हो, लेकिन दूल्हे की तो पहली है, लिहाजा बारात, बैंडपार्टी, नाच-गाने और आतिशबाजी की धूम के साथ एक दिन के हीरो बनने का एहसास तो उसे मिलना ही चाहिए।

बारात निकली, शानदार निकली। शहर के प्रायः सभी बैंडवाले उसके लिए अपनी भागीदारी देने को तैयार बैठे थे। सेराज ने मुन्ना बैंड को ही यह जहमत दी। माघी चाहती थी कि उसे क्लार्नेट बजाने का मौका मिले और उस्ताद सेराज की निगहबानी में उसने जितने गाने के रियाज कर रखे थे, सब बजा डाले। दुर्भाग्य से आज कोई बजनिया अनुपस्थित नहीं था। अंततः उसके नसीब में इस बारात में ट्यूब लाइट का गमला ढोना ही बदा था। वह माथे पर गमला लेकर चल रही थी। जिस बारात में उसे दुल्हन होना था, उसमें वह एक रेजा बनकर रौशनी का गमला ढो रही है। उसकी निगाहें दूल्हे के रूप में सजे सेराज को देखना चाह रही थीं। सेराज भी थोड़ी दूरी पर अपनी रेंग रही भाड़े की कार में बैठा माघी के दीदार के लिए तरस रहा था।

अपने भाग्य के इस खेल पर माघी का चेहरा मलिन हो उठा। वह रौशनी लेकर चलती है, लेकिन खुद बेरौशन रह जाती है। तीस की होने को आयी, दर्जनों बारात लेकर चली, लेकिन उसकी बारात निकलने के कोई आसार नहीं। कितनों के ब्याह का एक जिंस बनी, लेकिन लगता है खुद सारी उम्र कुंवारी ही रह जायेगी।

कभी सेराज ने माघी के साथ मिलकर सपना देखा था कि दोनों मिलकर एक विशाल

बैंडपार्टी की दुकान खोलेंगे और साथ ही एक विश्वसनीय टेलरिंग हाउस भी चलायेंगे। माघी सोचती है कि सपने तो सपने होते हैं, वे सच भी हो जायें, जरूरी तो नहीं।

माघी रोज सपने देखती, जो नींद खुलने पर तार-तार हुए रहते। वह मन ही मन सोचती कि काश इन सपनों को भी सिलने की कोई मशीन होती। वह जब कोई अच्छा सा कपड़ा सिल रही होती तो उसे लगता जैसे वह अपने अधूरे और तार-तार हुए सपने को ही सिलकर पूरा कर रही है।

नरसा मुर्मू एक दिन उसके घर आ धमका। पहले तो अपलक निहारा उसे, फिर कहने लगा, 'अब टैम आ गया है माघी। हम तुमसे शादी बनाने को तैयार है।'

'तुम बहुत लालची और डरपोक हो नरसा। तुम किसी के पति होने के लायक नहीं हो, मेरे तो बिल्कुल ही नहीं। मैंने तो तुम्हारी याद को गांव से निकलते हुए नाले में ही बहा दिया। तो शादी तो सुना, तुम पहले भी कर चुके, फिर क्या मुंह लेकर आये हो कि मुझे कुछ भी पता न होगा? निकल जाओ यहां से। दोबारा फिर अपनी शक्ल दिखाने का साहस मत करना।'

'ज्यादा अकड़ मत दिखाओ, माघी। तुम कोई सती-सावित्री नहीं हो। हम भी जानते हैं कि तुम शहर में कौन-कौन करम करके टिकी हुई हो। तुम्हारी हालत थोड़ी बदल गयी है तो हमने सोचा कि चलो, हम भी तुमको साथ दे दें। जिन बुरे मर्दों के चंगुल में फंसी हो, उनसे मुक्ति दिला दें। तुम्हारा भाई रोगला एक दिन हमारे घर आ गया। उसने हमारे माथे से पिस्तौल सटा दिया और कहा कि मेरी बहन से तुम शादी करोगे कि उड़ा दूं भेजा। उसी के कहने पर हम तुम्हारे पास आये हैं।'

माघी को लगा कि दीवार से अपना सिर फोड़ ले। रोगला उसे आबाद करना चाहता है या कि बर्बाद। खुद को और मां-बाबा को तो बर्बाद कर ही चुका, एक मैं बची हूं तो लगता है अब मैं भी कहां बचूंगी। जो उसे गंदी और बुरी लड़की समझता है और डरकर शादी करने को तैयार हुआ है, वह उसका कहां तक और कितना भला करेगा?

माघी ने खरी-खरी सुना दी, 'रोगला फिर मिले तो कह देना कि वह मेरी फिक्र न करे। उसके फिक्र करने से सिवा तबाही और बर्बादी के कुछ नहीं होता। मुझे वह अपने हाल पर छोड़ दे। तुम भी अगर सचमुच मेरा भला चाहते हो तो आगे कभी मुझसे मिलने की मेहरबानी मत करना।'

'तुम कम से कम इतना तो बता दो माघी कि वो कौन-कौन लोग हैं, जो तुम्हें अकेले जानकर तुम्हारे साथ बुरा बरताव करते हैं।'

'औरत अकेली हो या अपने शुभचिंतकों की भीड़ में, उसकी मर्जी के बिना बुरा बरताव करने की किसी की हिम्मत नहीं हो सकती। तुम जाओ नरसा, मेरा ज्यादा खैरख्वाह मत बनो। तुम्हारे जैसे लोग जब खैरख्वाह बनते हैं तो मुसीबत वहीं से शुरू हो जाती है।'

'शहर ने तुम्हें बहुत बोलना सिखा दिया है, माघी। लेकिन भूलना मत कि तुम एक आदिवासी लड़की हो। तुम्हारी यह पहचान तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी और शायद हम भी नहीं। अभी चलते हैं।'

लोग कितना मोहताज बना देते हैं एक उस अकेली लड़की को जो अपने दम पर अपनी दुनिया बसाना चाहती है। यह सच था कि बैंड में शामिल लोग और बारात में चलते हुए बहुत सारे लोग उसे बस एक सेक्स मशीन ही समझते रहे थे और उसे तरह-तरह से गंदे प्रलोभन देते रहे थे। लेकिन अब माघी इन सबको निरुत्तर करना सीख गयी थी या कि सेराज ने उसे सिखा दिया था।

शादी के पहले सेराज से वह लगभग हर पल मोबाइल से जुड़ी रहती थी। हर रोज उसकी नींद उसके गुडमार्निंग कॉल से ही खुलती। रात को वह गुडनाइट कहकर लव यू डार्लिंग जरूर कहा करता। माघी जोहार कहकर हंस देती। यह सिलसिला अब लगभग खत्म हो गया। दिन में कभी-कभार माघी, कभी वह, एक-दूसरे का हालचाल पूछ लिया करते। संवाद का यह गैप क्रमशः बढ़ता चला गया। दिन से सप्ताह, पखवारा और फिर महीना हो गया। माघी बीच-बीच में मिसकॉल करती कि अगर परिस्थिति बात करने के माकूल होगी तो वह बात कर लेगा। इस मर्तवा उधर से कोई उत्तर न पाकर उसने कई बार अंतिम घंटी बजने तक कॉल किया। उधर से कोई रिप्लाई नहीं। माघी को चिन्ता हो गयी कि कहीं उसकी तबीयत तो खराब नहीं हो गयी? वह कहा करता था कि क्लार्नेट और ट्रम्पेट बजाने वाले को अक्सर सांस की बीमारी हो जाती है। उसका भी दम रह-रह कर फूलने लगता है।

चिंतातुर होकर माघी ने दनादन कॉल करना शुरू कर दिया। खीज से भरकर उधर से कॉल उठाया मेहंदी ने, 'हां माघी, बोलो। कौन सा कुफ्र टूट पड़ा, जो इतनी बेसब्री से खलल डालने पर आमादा हो।'

माघी ने विनय भाव से कहा, 'बहुत दिनों से सेराज बाबू की कोई खबर न मिली। वे खैरियत से तो हैं न।'

'आज के बाद फिर कभी कॉल मत करना। तुम्हें उसके साथ जितनी मस्ती करनी थी, कर ली। अब वह मेरा शौहर है। मुझे यह पसंद नहीं कि मेरा शौहर किसी गैर औरत से गुटरगूं करे। उसकी खैरियत तुमने पूछी है तो बता दूं कि वह इन दिनों बीमार चल रहा है। उसकी नाक में ऑक्सीजन लगी है। अल्ला हाफिज।'

माघी अनेक दुश्चिंताओं से घिर गयी। कहीं ऐसा तो नहीं कि सेराज बाबू अब कभी

क्लार्नेट और ट्रम्पेट नहीं बजा पायेंगे? फिर उनकी गुजर-बसर कैसे होगी? सोचते-सोचते उसकी आंखें छलछला आयीं। मन होने लगा कि वह भागकर उनके घर पहुंच जाये और उनके गले लगकर उन्हें तसल्लियों से लाद दे। आप फिक्र न करें, सेराज बाबू। आपकी सांसे अगर साथ न देंगी तो क्या हुआ, आप मेरे होठों से और मेरी सांसों से क्लार्नेट बजायेंगे। मेरे क्लार्नेट और ट्रम्पेट से आपके ही बोल निकलेंगे। वह रात उनींदेपन में ही कट रही थी। ढाई-तीन बजे होंगे कि दरवाजे पर एक दस्तक और हांक सुनायी पड़ी। कहीं गलत इरादे लेकर नरसा तो नहीं आ धमका। पुकारने की आवाज को जरा ध्यान से सुना तो मानो उसे विश्वास ही नहीं हुआ। आवाज उसके भाई रोगला की थी, धीमी, आत्मीयता से भरी हुई और स्नेह से पगी। उसने दरवाजा खोला, रोगला अंदर आ गया। उसके पांच साथी और थे जो बाहर ही रह गये, पहरेदारी में। माघी ने सिर से लेकर पैर तक उसे कई बार निहारा। एक बहुत ही मैले-कुचैले फौजी लिबास में रोगला किसी बुत की तरह खड़ा था। उसकी कमर से एक पिस्टल लटक रही थी। कई हफ्तों से न नहाने की एक गंध वहां पसरने लगी थी।

रोगला ने पूछा, 'कैसी हो दीदी?'

जवाब में फफक कर रो पड़ी माघी। रोगला ने उसे अपने गले से लगा लिया। आंसुओं की रुकी हुई बाढ़ पता नहीं दुख के किस-किस जमे हिमालय से पिघलने लगी। मां-बाबा की नृशंस हत्या पर भी तो उसे रोने का मौका नहीं मिला था। कहां रोती? किसके कंधे पर सिर रखकर रोती? कितने लोगों ने इस शहर में उसे अकेली जान हवस का शिकार बनाना चाहा, उसकी आंखें कहां भींगी। सेराज जीवन साथी बनते-बनते न बना, इस आघात पर भी उसने मन मार लिया। नरसा ने उसे झटके पर झटके दिये, वह जब्त करके रह गयी।

रोगला ने उसके आंसुओं को अपने रूमाल में मानो सहेजते हुए कहा, 'हम तुम्हारे और मां-बाबा के अपराधी हैं, दीदी। क्या करें, व्यवस्था से हम पूरी तरह ना उम्मीद हो गये हैं। कदम-कदम पर हमें ठगा जा रहा है। सरकारी तिजोरियों की सरेआम लूट और बंदरबाट हो रही हैं। इस भ्रष्ट युग में कौन भ्रष्ट, बेईमान, अपराधी और चोर नहीं है, पहचानना मुश्किल हो गया है। जब लगा कि सारे रास्ते बंद हैं तभी हमने जंगल का रास्ता अपनाया।'

'लेकिन जंगल का रास्ता समाधान का रास्ता नहीं है भाई। अगर है तो मुझे भी अपने साथ ले चलो। थक गयी हूं मैं... हर कोई अकेली और जरूरतमंद समझकर खिलौना बना लेना चाहता है।

'नहीं दीदी, नहीं, बिल्कुल नहीं। कभी सोचना भी मत हमारे रास्ते जाने के बारे में। वहां जिस दलदल और कांटों से गुजरना पड़ता है, हम तुम्हें उससे गुजरते नहीं देख सकते। यहां तुम जैसी भी हो, ठीक हो। हर पल मौत का खुला हुआ दरिंदा जबड़ा तुम्हारे सामने नहीं है।'

'अगर इतना बुरा है वहां सब कुछ, तो तुम भी वापस क्यों नहीं आ जाते?'

'हम वापस नहीं आ सकते दीदी। हमारे पैर उस दलदल में इस तरह लिथड़कर फंस गये हैं कि निकल नहीं सकता। हम अब जिंदगी के नहीं मौत की दुनिया के निवासी है। तुम्हारे बारे में मैं सब खबर रखता रहा हूं। अब तो बस तुम्हें देखकर ही जरा सी जीवन की अनुभूति कर लेता हूं। सुना है कि तुम बहुत सारे साज बजाना सीख गयी हो। सेराज ने तुम्हें साथ नहीं दिया, तुम दुखी मत होना। नरसा से तुम शादी नहीं करना चाहती, मत करो। तुम अपना एक बैंड पार्टी बनाना चाहती हो, बनाओ दीदी, खूब भव्य बनाओ। जितने पैसे चाहिए, मुझसे ले लो।'

'नहीं रोगला, मैं तुम्हारे पैसे से बैंड की दुकान नहीं चला सकती।'

'ठीक है, तुम मेरी मदद को उचित नहीं मानती, मेरे पैसे को स्वच्छ नहीं मानती। कोई बात नहीं। लेकिन वो पैसा तो तुम्हें लेने में कोई एतराज नहीं होना चाहिए, जो डुगरिया के अपने घर और खेत बेचने से मिलने वाले हैं। चूंकि वहां अब न तुम रहने वाली हो और न मैं, फिर उन्हें रखने का कोई मतलब भी क्या है।'

माघी ने इसका कोई जवाब नहीं दिया, जिसे रोगला ने उसकी स्वीकृति मान लिया। रोगला ने आगे कहा, 'तुम्हारे पास गांव का एक लड़का आयेगा और एक दस्तावेज पर दस्तखत करवायेगा। उससे तुम्हें पैसे मिल जायेंगे। बैंड की एक शानदार दुकान खोलना दीदी, जो इस शहर के लिए मिसाल बन जाये। मैं चाहता हूं कि मेरा जीवन भी तुम्हें ही मिले और मेरी हसरत भी तुममें ही फलित हो। मेरा क्या, कभी मैं मौत के आगे भाग रहा हूं, कभी मौत मेरे आगे भाग रही है। तुमसे ज्यादा संपर्क बनाकर मैं तुम्हें खतरे में नहीं डालना चाहता। नहीं जानता कि इस तरह तुमसे आगे कभी मिल पाऊंगा भी या नहीं।' कहते हुए रोगला की आंखें भर आयीं। माघी ने अपने आंचल में उसके आंसुओं को समेट लिया, जैसे मोती के दाने सहेज रही हो। रोगला ने एक बार फिर उसे गले से लगा लिया।

'चलता हूं दीदी। पुलिस वालों को कभी भी भनक लग सकती है। मैं तुम्हें दिखूंगा नहीं, लेकिन ऐसी कई आंखें हैं, जिनकी मार्फत अपनी सांस चलने तक तुम्हें देखना जारी रखूंगा।'

रोगला बाहर निकलकर निविड़ अंधेरे में गुम हो गया। उसकी आवाजें और उसकी

उपस्थिति उसके जेहन में किसी शिलालेख की तरह खुद गयी।

माघी ने अपने गांववाले घर और खेत की बिक्री वाले पैसे से शहर के मुख्य बाजार में भाड़े की एक जगह लेकर सेराज बैंड बाजा नाम से एक भव्य दुकान खोल दी। सेराज, उसकी बेगम मेहंदी और उसके अब्बा अचम्भित रह गये। माघी की सेराज से मोहब्बत और एहतराम की ऊंचाई का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा। एक दिन सेराज हांफता और खांसता हुआ उसकी दुकान में तशरीफ ले आया। माघी ने उसके दर्शन से खुद को धन्य-धन्य करते हुए कहा, 'यह दुकान आपकी ही है सेराज बाबू, मैं तो बस आपकी एक मुलाजिम की तरह काम करूंगी। आपको आने में तकलीफ न हो तो रोज आया करें और संभालें यहां की गद्दी।'

सेराज ने अपनी बिखरती सांसों को संभालते हुए कहा, 'इतनी बड़ी दुकान! इतने नये-नये आधुनिक इंस्ट्रुमेंट! इतनी सारी नयी-नयी रंग-विरंगी पोशाकें! शहर के चुने हुए साजिंदों की टीम! कैसे मुमकिन बना दिया माघी? इतनी ऊंची उड़ान भरने वाले पंख आखिर तुम्हें मिले कहां से?'

'सब कुछ आपका ही दिया हुआ है सेराज बाबू। मैं जो कुछ हूं आपकी वजह से ही तो हूं।

सेराज को लगा जैसे माघी ने उसकी जिंदगी के रुके हुए सफर को एक नयी मंजिल दे दी। उसकी असाध्य बीमारी का इससे बड़ा अचूक इलाज भला और क्या होगा? माघी एक जीवन दायक औषधि की तरह उसकी नस-नस में बहने लगी।

सेराज बैंड बाजा एक विश्वसनीय और उच्चस्तरीय ब्रांड बनकर छा गया पूरे शहर में। हर बड़े आयोजन, हर बड़ी बारात और हर बड़े जुलूस में सेराज बैंड ही बुक होने लगा। सारे साजिंदे भड़कीले यूनिफार्म में होते, लेकिन माघी लाल ब्लाउज और लाल पाड़ की सफेद साड़ी में आंचल को कमर से बांधकर डुगरिया गांव की आदिवासी लड़की की पहचान में क्लार्नेट बजाती दिखती और फिल्मी धुनों के गागर में सागर छलका देती। देखनेवाले-सुननेवाले हैरान हो उठते।

सूबे का एक पूर्व मुख्यमंत्री, जो 35 से 40 हजार करोड़ रुपये के गबन के आरोप में जेल में बंद था और जेल में रहते हुए उसने लोकसभा का चुनाव जीत लिया था, के गुर्गे एक भव्य विजय जुलूस निकालने की तैयारी करने लगे थे। सेराज बैंड बाजा से संपर्क किया गया। माघी ने इंकार कर दिया। मुंहमांगा शुल्क देने को वे तैयार हो गये। उसने फिर भी अपना निर्णय नहीं बदला।

सेराज ने उसे समझाने की कोशिश की, 'हम पैसों के लिए काम करते हैं। हमें ले जाने वाला कौन है, इससे हम मतलब नहीं रखते। यह आदमी कितना भी बुरा है, लेकिन जनता ने वोट देकर जिताया है, तो फिर हम कौन होते हैं उसे खारिज करने वाले।'

माघी के चेहरे पर एक रोष उभर आया और उसकी आवाज में एक तल्खी समा गयी, 'उसने गरीब जनता में हराम के बेइंतहा पैसे बहाकर और बांटकर जीत हासिल की है। फटीचर और बिकाऊ युवाओं में एक हजार मोटरसायकिल बांटकर वोटों की लूट करवायी है। उसने राज्य के विकास कोश में सेंध लगाकर युवाओं को जंगल का रास्ता पकड़ाकर बागी बनने के लिए मजबूर किया है। वह देशद्रोही है, हमारा बैंड उसके जश्न में शामिल होकर उसका समर्थन नहीं करेगा। हम पैसे के लिए काम जरूर करते हैं, लेकिन एक घोषित भ्रष्ट आदमी के लिए काम करना हमारी लाचारी नहीं है, सेराज बाबू।'

यह पहला मौका था जब माघी ने सेराज से असहमति व्यक्त करते हुए एक बड़े उसूल की लकीर खींच दी थी, जिसमें उसके अपने भाई रोगला की पीड़ा भी समाहित थी। सेराज नाराज होने की जगह माघी पर और भी आसक्त हो उठा।

अगले दिन उस पतित, कुख्यात और भ्रष्ट नेता के गुंडों ने सेराज बैंड बाजा में घुसकर भारी तोड़-फोड़ मचा दी। कई नये इंस्ट्रुमेंट हैंगर से निकालकर पटक दिये गये और कई नयी पोशाकें फाड़ दी गयीं।

माघी को इस उत्पात का कोई दुख न हुआ। उसे बस संतोष था तो इस बात का कि एक शातिर देशद्रोही नेता के जश्न में शामिल होने से उसने खुद को और अपने बैंड को बचा लिया।

❑❑

एस एफ-3/116,
बाराद्वारी सुपरवाइजर फ्लैट्स,
साकची, जमशेदपुर- 831001,
मो. नं. 09431328758